2

ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार

लक्ष्मी अग्रवाल *

खेल बच्चों को शुरू से ही आकर्षित करते हैं। परंतु बच्चे जब औपचारिक शिक्षा के लिए स्कूल जाते हैं तो अधिकांश स्कूलों में खेलने के अलावा सब कुछ होता है। बच्चों को यहाँ घर-सा वातावरण नहीं मिलता बल्कि स्कूल उन्हें कैद की तरह लगता है। इसका दुष्परिणाम यह होता है कि अत्यंत चाव और उत्सव के साथ स्कूल में कदम रखने वाला बच्चा स्कूल से विमुख होने लगता है। अत: आरंभिक विद्यालयों में बच्चों की रुचियों को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम बनाने तथा उसे लागू करने की आवश्यकता है।

''बेटी! तुम हर समय चित्र क्यों बनाती रहती हो। जाकर पार्क में खेल आओ न।'' – माँ ने कहा।

''देखो माँ! मुझे सबसे अच्छा खेल यही लगता है, प्लीज माँ!''

''आओ बेटा! चलो लूडो खेलें। उठो-उठो ।'' शिशु मनोविज्ञान की विशेषज्ञ माँ ने अपनी तीन वर्षीय बेटी सोनाली से कहा।

''नहीं ..... ना.....उहूँ..... उहूँ''

''अच्छा बाबा (प्यार से सिर पर हाथ फेर कर) तुम चित्र ही बनाना ।''

सामने वाली आँटी खिड़की से सारा तमाशा देख रही थीं। उनके यहाँ पड़ोस की रमा बहनजी भी बैठी थीं। वह उनसे बोलीं – ''अरे बहन जी! देखो तो ये औरत कितनी पागल है। बच्चा कुछ पढ़-लिख रहा है तो कह रही है – खेलो जाकर, पढ़ो मत जबकि खुद लेखिका है।''

अरे ये लेखक आधे पागल होते हैं। उपेक्षा से बात आगे बढ़ाते हुए बोलीं– ''इसकी बच्ची एक दिन आई थी। मैंने पूछा कोल्डड्रिंक पियोगी कि चाय, तो बोली हम लोग ठंडई या काढ़ा पीते हैं। चाय-वाय नुकसान करती है।''

बहन जी के नाटकीय अंदाज पर हँसते हुए आँटी जी ने बताया– ''ये लोग फल भी खूब खाते हैं।'' मैडम से पूछो कि सोनाली 'फास्ट फूड' नहीं खाती क्या, तो कहती हैं –

* ई-4527, सेक्टर-12, राजाजीपुरम लखनऊ - 226017

''यदि शुरू से ही इसकी बुराईयों से बच्चों को अवगत करा दो तो वे 'फास्ट फूड' के प्रति आकर्षित नहीं होते।''

''जानती हो! एक दिन हमसे कह रही थी– कोई ऐसा स्कूल बताइए जहाँ पढ़ाई न होती हो।''

''वाह क्या 'डायलॉग' मारा है।'' आँटी जी के कहते ही दोनों समवेत स्वर में हँस पड़ीं।

''देखो-देखो, वह आ रहीं हैं।''

'आइए-आइए मैडम! आइए बैठिए। और बताइए..... कि उस बच्ची के स्कूल का पता किया''

''हाँ! एक स्कूल मिला है जहाँ पर 'प्ले-ग्रुप' है। सोनाली वहाँ पर खेलने जाया करेगी।''– माँ ने बताया।

''तो सोनाली को घर क्यों नहीं रखती? ये औरत क्रेकमाइंड है न।'' आँटी जी बहन जी के कान में फुसफुसा कर कहती हैं।

''हाँ! बिलकुल सही कहा।''

माँ ने पूछा – ''आप लोग क्या बात कर रहीं हैं?''

''अ.....वो जो मेरा लड़का है न..... अ.....वो.....अ वो बिलकुल पढ़ता नहीं हैं।''

''कितने साल का है?''

''तीन साल का है। ट्यूशन भी लगाई थी। अभी तक अच्छी तरह ए बी सी डी भी नहीं सीख पाया है?''

''तीन साल का.....! फिर उसे पढ़ाना नहीं चाहिए। उसे खूब खेलने दीजिए।'' बड़े दर्द से माँ बोलीं।

''तो क्या सोनाली को आपने बिलकुल नहीं पढ़ाया? बातों से तो वह बड़ी होशियार लगती है। मैंने उसे खुद पढ़ते हुए देखा है।''

''जी नहीं, अभी पढ़ाना नहीं शुरू किया है। तभी तो खेल वाला स्कूल देखा है क्योंकि अभी वह चार साल की है। आपने जब देखा होगा तब वह चित्र बना रही होगी।''

कहकर माँ चली जाती हैं। वह सोच रही थीं कि कब बच्चे अपना बचपन जी सकेंगे? आखिर..... कब?

माँ के जाने के बाद औरतें ठहाका मार कर हँसती हैं। बहन जी कहती हैं – ''खुद तो बेवकूफ़ बना देगी। उफ.....खेलने की फ़ीस देगी.....ऐसा पागल मैंने कभी नहीं देखा।''

दूसरे दिन माँ सोनाली को लेकर स्कूल जाती हैं तथा स्कूल में भर्ती करवा देती हैं। स्कूल में अगले दिन सोनाली जाती है और कक्षा में बैठ जाती है।

समवेत स्वर – ''गुडमार्निंग मैडम''

मैडम – ''सिट डाउन चिल्ड्रेन''

थोड़ी देर बाद सोनाली मैडम से पूछती है – ''मैडम जी! शू-शू करने जाएँ?'

'ऐसे नहीं बोलते, बोलो मैडम! मे आई गो टू टॉयलेट।''

''मैडम! आई गो टू शू-शू करने जाएँ?''

टीचर झल्ला कर कहती हैं – ''कहीं नहीं जाना है। चुपचाप बैठ, शेखचिल्ली कहीं की।''

सोनाली भय के कारण रो भी न सकी। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि उसकी गलती क्या है? उसे..... उस अबोध बच्चे

को नहीं पता था कि हिंदुस्तान में हिंदी बोलना बेशर्मी है तो अँग्रेज़ी में उसी बात को कहना 'मैनर' कहलाता है।

कुछ देर बाद वह फिर बोली – ''मैडम बड़ी तेज लगी है।''

मैडम ने गुस्से से लाल होकर कहा – ''अच्छा जाओ।''

सोनाली जाती है और थोड़ी देर बाद वह कक्षा के अंदर आने लगती है।

मैडम कहती हैं – नहीं पहले गेट पर ही खड़े होकर पूछो – 'मैडम मे आई कम इन', 'मैडम मे कनिंग।'

मैडम डाँट कर कहती हैं – ''अच्छा बैठो! पता नहीं कैसी लड़की है। कहो कुछ तो कहती कुछ है।''

सोनाली को प्यास लग रही थी। उसने अपनी बोतल खोली और पानी पीने लगी। मैडम दाँत पीसती हुई बोलीं – ''घर नहीं है तुम्हारा कि जो मन में आया कर लिया पहले मुझसे पूछो फिर पानी पियो।''

सोनाली घबराते हुए मैडम के पास बोतल लेकर जाती है और कहती है ''मैडम जी! ... ... पानी पी लें।''

''बोलो, मैडम! में आई ड्रिंक वाटर?''

''मैडम! में आई पिक वाटर?''

मैडम गुस्से से उसकी तरफ़ घूरती हैं। सोनाली सकपका कर बिना पिए ही सीट पर बैठ जाती है।

प्ले-ग्रुप की इस कक्षा में वह सुबह से ही कक्षा के चारों तरफ़ लगी पारदर्शी अल्मारियों में रखे हुए खिलौनों को ललचाई नज़रों से देख रही थी।

मैडम ने बच्चों से कहा– ''बच्चों! बोलो–'ट्विंकल-ट्विंकल लिटिल स्टार। मे आई वन्डर व्हॉट यू आर।''

बच्चे इसका अर्थ समझे बिना रटने लगे। एक बच्चे ने पूछा – ''मैडम! स्टार उसको कहते हैं न जो रात को आसमान में चमकता है।''

''तुम बीच-बीच में बहुत बोलते हो। जो कहा जा रहा है उसे लर्न करो।''

सब बच्चे फिर यंत्रवत् बोलने लगे। ''ट्विंकल-ट्विंकल.....।''

इतने में प्रिंसपिल किसी को साथ में लेकर आती हैं और कक्षा दिखाते हुए कहती है ''देखिए ये प्ले-ग्रुप के बच्चे हैं। सब 'पोयम' सीख रहे हैं। ये खिलौने हैं इनके लिए।''

आगंतुक सज्जन खुश हो जाते हैं और एक-दो बच्चों के गाल थपथपा कर चले जाते हैं।

सोनाली कसमसाने लगी। उसका मन सामने वाली अल्मारी में रखे हाथी में लगा था। वह धीरे-से उठकर हाथी के पास चली गई और उसे देखकर प्रसन्न होने लगी..... लेकिन..... उसकी प्रसन्नता अधिक देर तक न टिक सकी।

''चलो, कान पकड़कर खड़ी हो जाओ। सारे बच्चे लर्न कर रहे हैं और तुम घूम रही हो।'' मैडम का तेज़ स्वर उभरा।

सोनाली बुरी तरह सहम गई। उसकी आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे। उस बेचारी को क्या पता था कि ये खिलौने केवल बच्चों के ललचाने के लिए हैं और दूसरों को दिखाने के लिए हैं, खेलने के लिए नहीं हैं।

सामने खिलौने हों और बच्चों को खेलने न दिया जाए, खेलना तो दूर छूना या पास में खड़ा होना तक मना हो। यह तो वैसा ही है जैसे किसी भूखे व्यक्ति के सामने खाने के विविध व्यंजन रखे हों और उसे खाने की मनाही हो।

सोनाली बेहद दु:खी हो गयी। जिस बच्चे को सदा सहजता का वातावरण मिला हो, वह. ..... खैर, छुट्टी हो गई। उसे मुक्ति का एहसास हुआ.....माँ स्कूल लेने आईं थीं। माँ को देखते ही उसके अंदर की रूलाई फूट पड़ी। वह हिचकियाँ लेकर रोने लगी।

''क्या हुआ रे तुझे?'' गोदी में लेकर माँ ने पूछा।

''ऊँ.....ऊँ.....उहुँ.....उहुँ.....ऊँ.....माँ .....उहँ.....माँ.....ऊँ.....माँ माँ.....स्कूल नहीं जाऊँगी।''

माँ ने उसे ज़ोर से चिपका लिया और भरे गले से बोलीं ''ठीक है बेटी! तुम स्कूल मत जाना।''

उसके बिना बताए ही वह समझ गईं कि बच्चे की नर्सरी शिक्षा हो गई है। दोनों घर आ गए।

पंद्रह वर्षों से इसी विषय पर शोधकार्य करने वाली माँ फूट-फूट कर रो पड़ी- हाय यह कैसी विडंबना है कि मेरे ही बच्चे को तथाकथित नर्सरी रूपी जाल में तड़पना पड़ रहा है, जिससे बच्चों को मुक्त कराने के लिए वह ढेरों किताबें लिख चुकी थीं। नहीं.....नहीं..... ...वह नहीं पढ़ाएँगी..... ऐसे स्कूलों में ..... नहीं.....कभी नहीं.....बच्चे का बचपन अभी से नहीं छीनेगी।

शायद मेरिया मॉन्टेसरी भी रो रही होंगी और भगवान से कह रहीं होगी–''भगवान! मैंने तीन-चार वर्ष के बच्चों के लिए मॉन्टेसरी पद्धति की खोज तो इसलिए की थी कि बच्चों को अपने आयुवर्ग के बच्चों के साथ अपना बचपन जीने का मौका मिले और वह प्राथमिक शिक्षा के लिए तैयार हो सकें। उनकी स्कूल के प्रति रुचि जागृत हो। लेकिन यहाँ तो उल्टा देख रही हूँ। खेल आदि न होकर उन्हें पढ़ना-लिखना सिखाया जाता है या भाव-विहीन कविताएँ रटवाई जाती हैं। भगवान! जवाब दीजिए।''

और भगवान का जवाब होगा–

''वत्स! यह कलियुग के विद्यालय हैं। कलियुग में हर अच्छी-से-अच्छी वस्तु को भी बिगाड़ दिया जाता है। बच्चे अच्छे-खासे पाँच-छह वर्ष की आयु में विद्यालय जाते थे। तुम्हें क्या ज़रूरत थी मॉन्टेसरी प्रणाली खोजने की?''

और .....सोनाली तो निश्चिंत होकर दादी की गोद में दुबक कर कहानी सुन रही थी और आसमान में तारे देख रही थी। बाकी प्ले-ग्रुप के बच्चे घर में भी रट रहे थे – ट्विंकल-ट्विंकल लिटिल स्टार..... क्योंकि उन्हें कल कक्षा में टीचर को सुनाना था न।

❑❑❑